ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi **DATE: 24. 06.2020**

पाठ नाम - समय के ढेर पर

कवि परिचय:

बहुमुखी प्रतिभा एवं काव्यधारा के विशिष्ट कवि गिरिजाकुमार माथुर ने छायावादी संस्कारों से प्रेम और सौन्दर्य की बारीकियां लेकर अपनी काव्य-यात्रा की शुरुआत की । प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के आधुनिक भाव बोध, रागात्मक, ऐतिहासिक मूल्यों व बोध के बीच उनकी कविता में यथार्थवाद का स्तर भी कुछ उभरकर सामने आया है ।

माथुरजी की कविता सतही एवं कोरी भावुकता से युक्त न होकर, वर्तमान वैज्ञानिक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परम्परा से जुड़कर अनुभूति एवं सौन्दर्य दृष्टि से सम्पन्न है ।उनकी रचनाओं में सामाजिक परिवेश के साथ उभरते द्वन्द्व और तनाव का स्पष्ट प्रभाव दिखता है । उनकी रचनाओं में कविता संग्रह "मंजीर", "नाश और निर्माण", "धूप के धान", "शिलालेख ये पंख चमकीले", "जो बन्ध न सका", "भीतरी नदी की यात्रा", "साक्षी रहे वर्तमान", "कल्पान्तर", "मैं वक्त के हूँ सामने", "मुझे और अभी कहना है", "पृथ्वीकल्प" हैं ।

नाटक: "जनम कैद" । आलोचना तथा नयी कविता: "सीमाएं और सम्भावनाएं" । "तारसप्तक" के अन्तर्मन उनकी 12 कविताओं में अत्यन्त रोचक, मार्मिक वातावरण की सृष्टि की । इसके 20 वर्ष बाद उनकी 9 रचनाएं वक्तव्य सहित छपीं । इसमें प्रकृति की रंगीनी, उदासी, सौन्दर्य पिपासा, प्रेमविषयक स्मृतियां, अकेलेपन के अनुभव व संवेदनाएं गूँथी हैं ।**माथुरजी की कविताओं में मानवीयता का उद्घोष है । वे प्रयोगधर्मी कवि रहे हैं ।**

कविता का सारांश :

व्यर्थ गया है जीवन

इतने सारे वर्षों में

सिर्फ असमर्थता का ढेर-ढेर कूड़ा ही इकट्ठा हुआ

अधूरा रुका है वक्त

और यह देह सिर्फ आधी साँस लेती है

संदर्भ- संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित समय के ढेर पर कविता से ली गई है |

प्रसंग- कवि इन पंक्तियों के जरिए जीवन की असमर्थता को बताया है |

व्याख्या -_कवि कहते है कि यह जीवन पूरा बेकार ही बिना किसी कार्य को पूरा किए बगैर ख़त्म होता जा रहा है| अभी तक जितना भी समय बिता,उसमें सिर्फ असफलता ही मिली है | जीवन पर्यंत कवि के पास केवल नाकामी का कूड़ा - कचरा ही जमा हुआ है | ऐसा लगता है मानो समय जैसे रुक सा गया है ,और यह शरीर भी अब आधी हो गई है क्यूंकि यह आधीसाँस पर ही टिकी है |कवि निराशा एवं हताशा से ग्रस्त है | जीवन लक्ष्यविहीन सा हो गया है | इनका पूरा जीवन असफलताओं के बोझ से दबा हुआ है | पूंजी के रूप माँ मात्र असफलताओं के कचरे का ढेर है|कोई नया कार्य करने की प्रेरणा न होने के कारण समय भी जैसे रुक गया हो और अंत का इंतजार कर रहा हो |

हर सेकिंड को टोककर

जोर से डंक मारती है

बड़ी-बड़ी सुइयों वाली घड़ियाँ

निहाई पर चलते हुए

रक्त बूदों के रिबन

हर बूंद पर पड़ता है

पलों का हथोड़ा

कुचल जाता है एक और मिनट

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित समय के ढेर पर कविता से ली गई है |

प्रसंग- कवि जीवन की क्षणभंगुरता में विश्वास करते है | जीवन के प्रत्येक पल को न जीने पाने की निराशा इन पंक्तियों में व्यक्त हुई है |

व्याख्या - कवि के अनुसार घड़ी की सुई जैसे- जैसे आगे बढती जाती है, मानो जीवन ख़त्म होता जा रहा है | कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो घड़ी की प्रत्येक ठन की आवाज़ के साथ ही उनके जीवन का एक-एक मिनट कम होता चला जाता है | इसलिए कवि को घड़ी के सेकंड की सुई डंक की जैसी और मिनट की सुई हथौड़े के मार जैसा महसूस हो रहा है | कवि एक-एक पल को जीने में विश्वास रखते है | जिंदगी का यूँ ही व्यर्थ गुजरना हताशा को जन्म देता है |आज जब कवि स्वयं ये कर पाने में असमर्थ है,तब उनके अन्दर आशा का अभाव हो गया है |

मुझे डर लगता है

हर तेज घड़ी की आवाज़ से

सन्नाटे में

एक सेकिंड और बिन चीखे मरता है

मेरी उम्र पर लगातार कोई एक छाया - पाँव धरता है

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित समय के ढेर पर कविता से ली गई है |

प्रसंग- जीवन को न जी पाने के कारण जिस अवसाद का जन्म होता है , कवि की इन पंक्तियों के जरिए उस भाव को प्रकट किया है |

व्याख्या - कवि में जीवन के क्षण - क्षण को जीने की चाह है | लेकिन जब घड़ी की सुई पल-पल आगे बढ़ती जाती है, और कवि जब समय को यूँ ही व्यर्थ में गुजरता हुआ देखते है ,तब उन्हें ऐसा लगता है मानो काल रूपी छाया उनकी उम्र को अपने वश में करती जा रही है | इसलिए कवि को अब हर तेज घड़ी की उस आवाज़ से जो सन्नाटे में गूंजती है , उससे डर लगता है |

NAME-PRITI TIWARI